बैठा आस लगाए जल्दी साल पूरा हो जाए

दीपक मेहता

मूल चित्रकार
रानी अहीरे

चित्र सज्जा
शिल्पा रानडे

बुक डिज़ाइन
सौमित्र रानडे

IDC IIT BOMBAY
एकलव्य

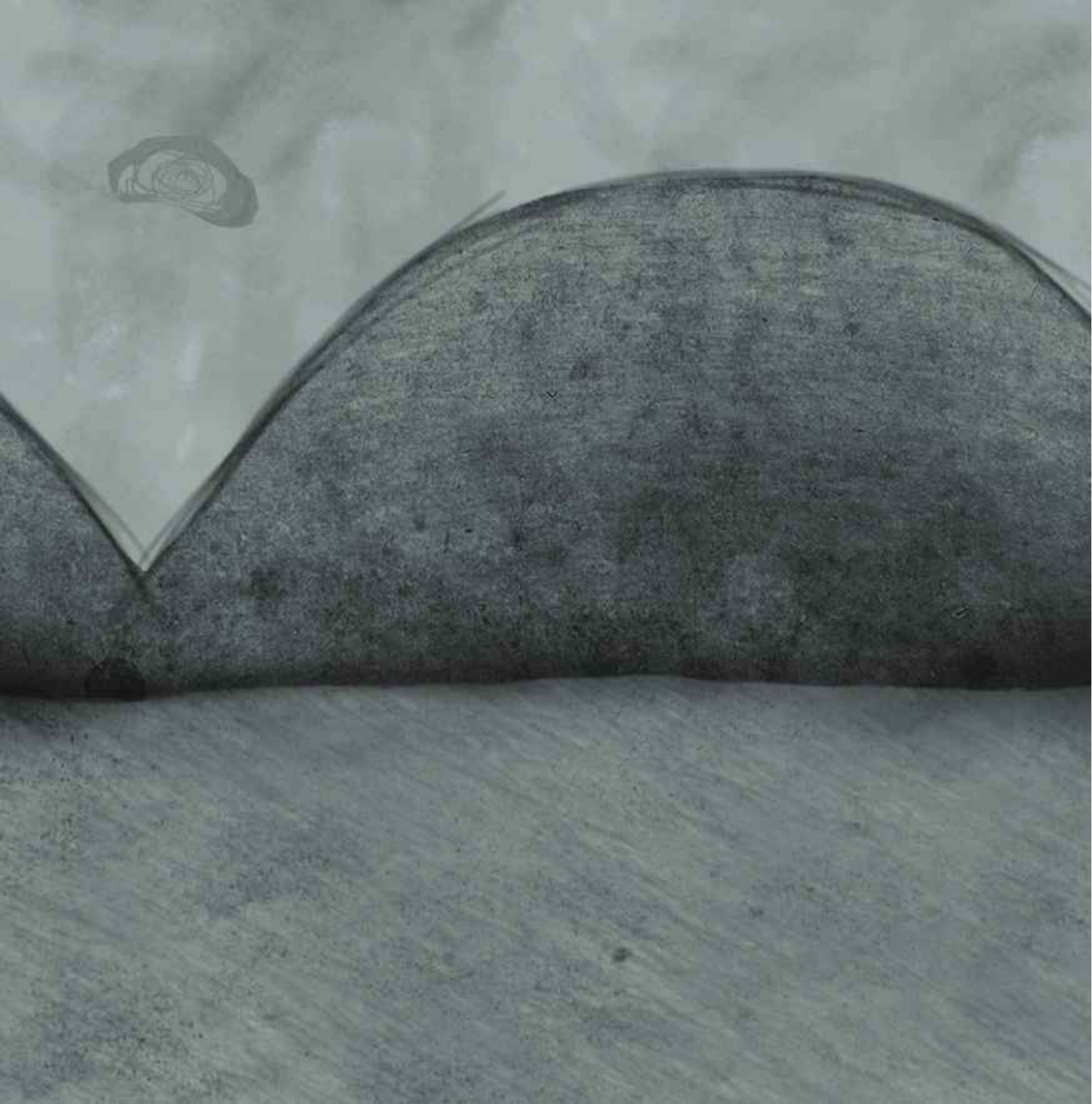

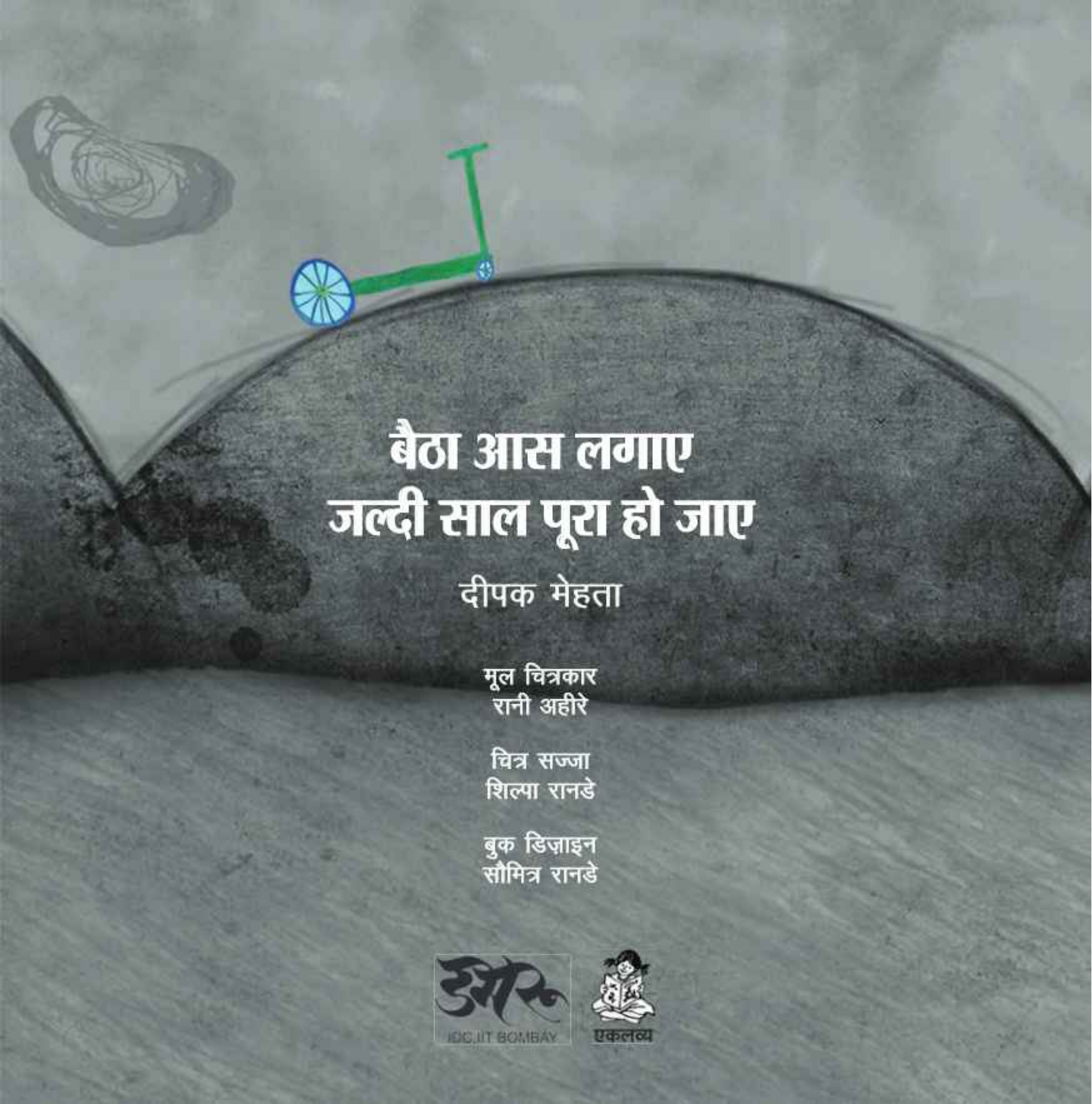

बैठा आस लगाए
जल्दी साल पूरा हो जाए

दीपक मेहता

मूल चित्रकार
रानी अहीरे

चित्र सज्जा
शिल्पा रानडे

बुक डिज़ाइन
सौमित्र रानडे

IDC,IIT BOMBAY

एकलव्य

मेरे सब दोस्त साइकिल चलाते थे। तो मेरा भी मन होता था कि मैं भी साइकिल चलाऊँ। एक दिन मैंने मम्मी से कहा, "मम्मी मुझे भी साइकिल दिलाओ।"

मम्मी ने कहा, "तू पहले साइकिल चलाना तो सीख ले।"

मैंने कहा, “किससे साइकिल चलाना सीखूँ और कहाँ चलाऊँ?
कोई भी तो नहीं सिखाता।”

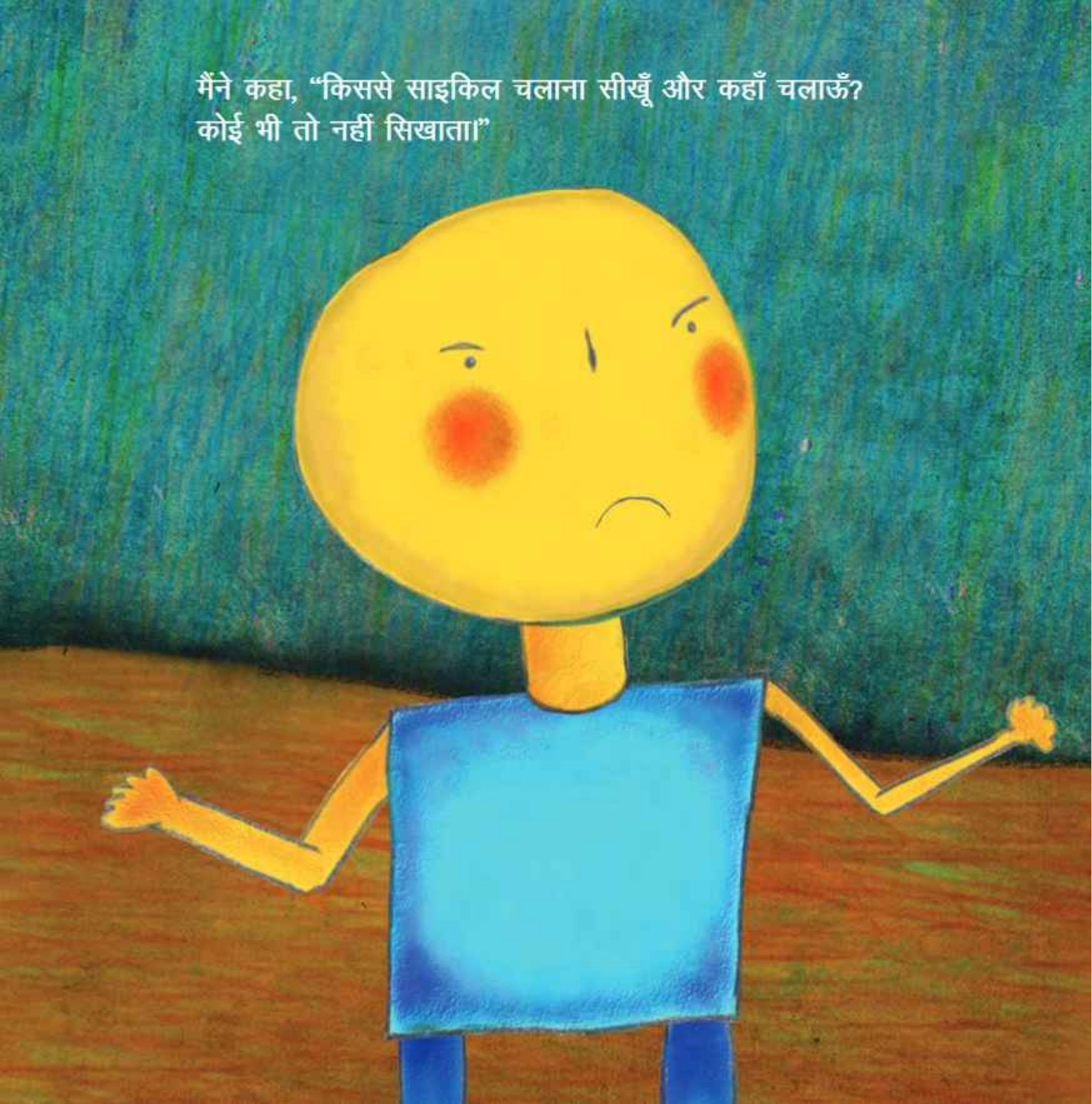

मम्मी बोली, “तू अपने पापा से बात करना।”

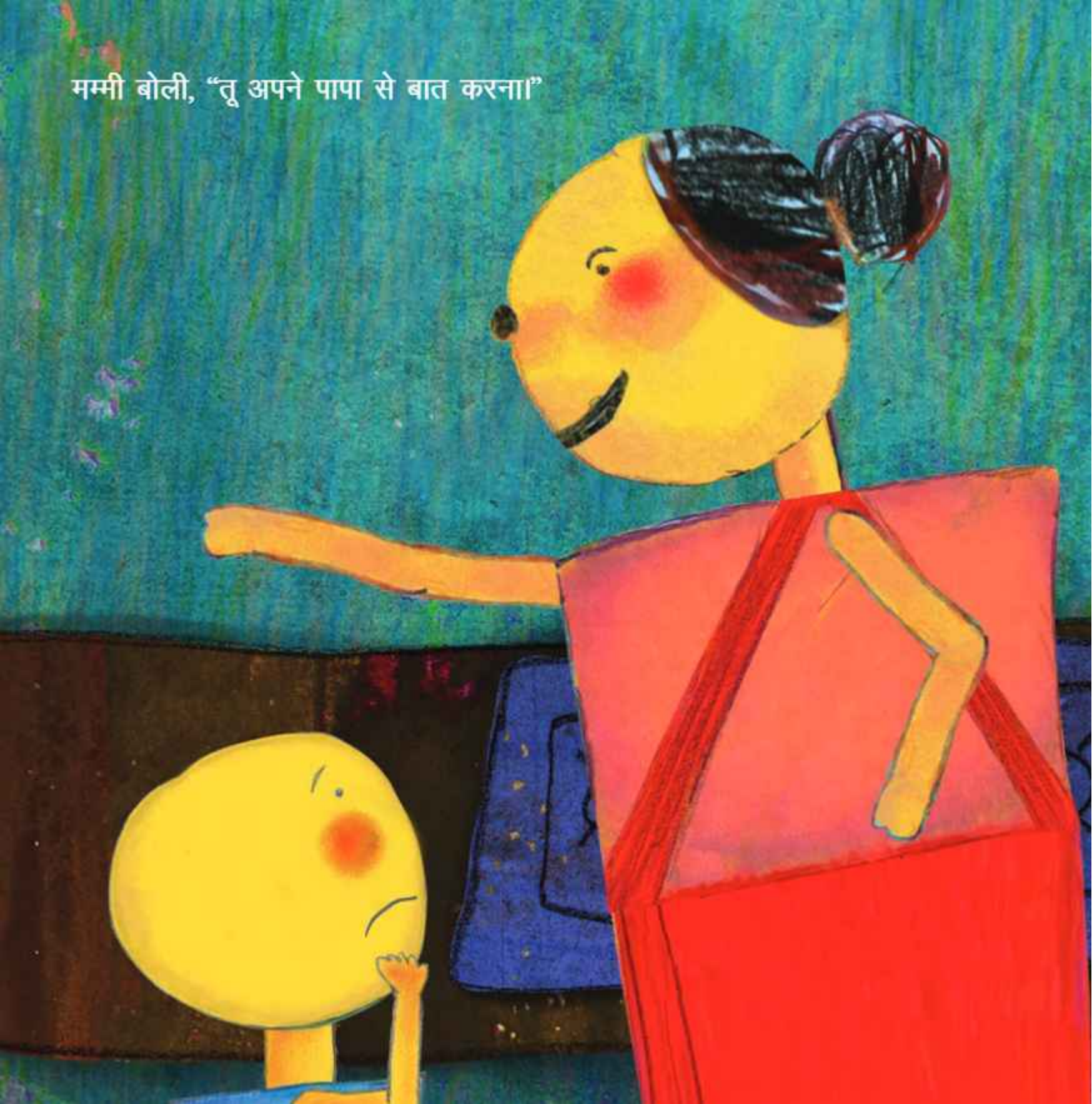

मैंने कहा, “ठीक है, मैं अभी
खेलने जा रहा हूँ।”

शाम को मैं घर आया तो
पापा आ गए थे।

मैंने कहा, "पापा हमें साइकिल दिलाइए।"

पापा ने कहा, "तू अभी छोटा है। तुझसे साइकिल नहीं चलेगी।"

मैंने कहा, "मेरे सभी दोस्त भी तो छोटे हैं। फिर वो कैसे सीख गए?"

पापा को हार माननी पड़ी।

कहा, "अगले साल दिला दूँगा
जब तू चौथी में चला जाएगा।"

मैंने पापा की बात मान ली।

मुझे लगता कब जल्दी से चौथी में
आऊँ और साइकिल आए।

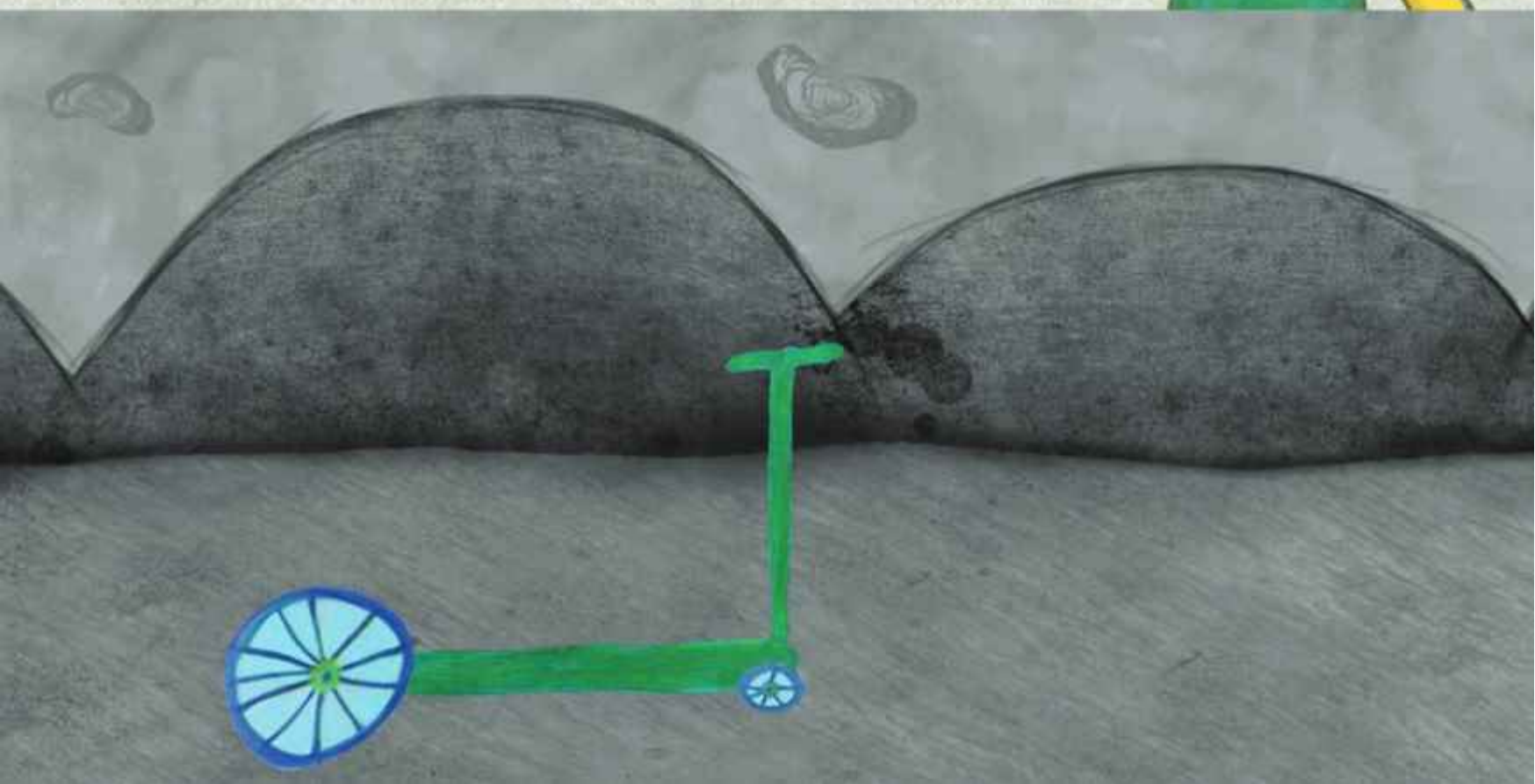

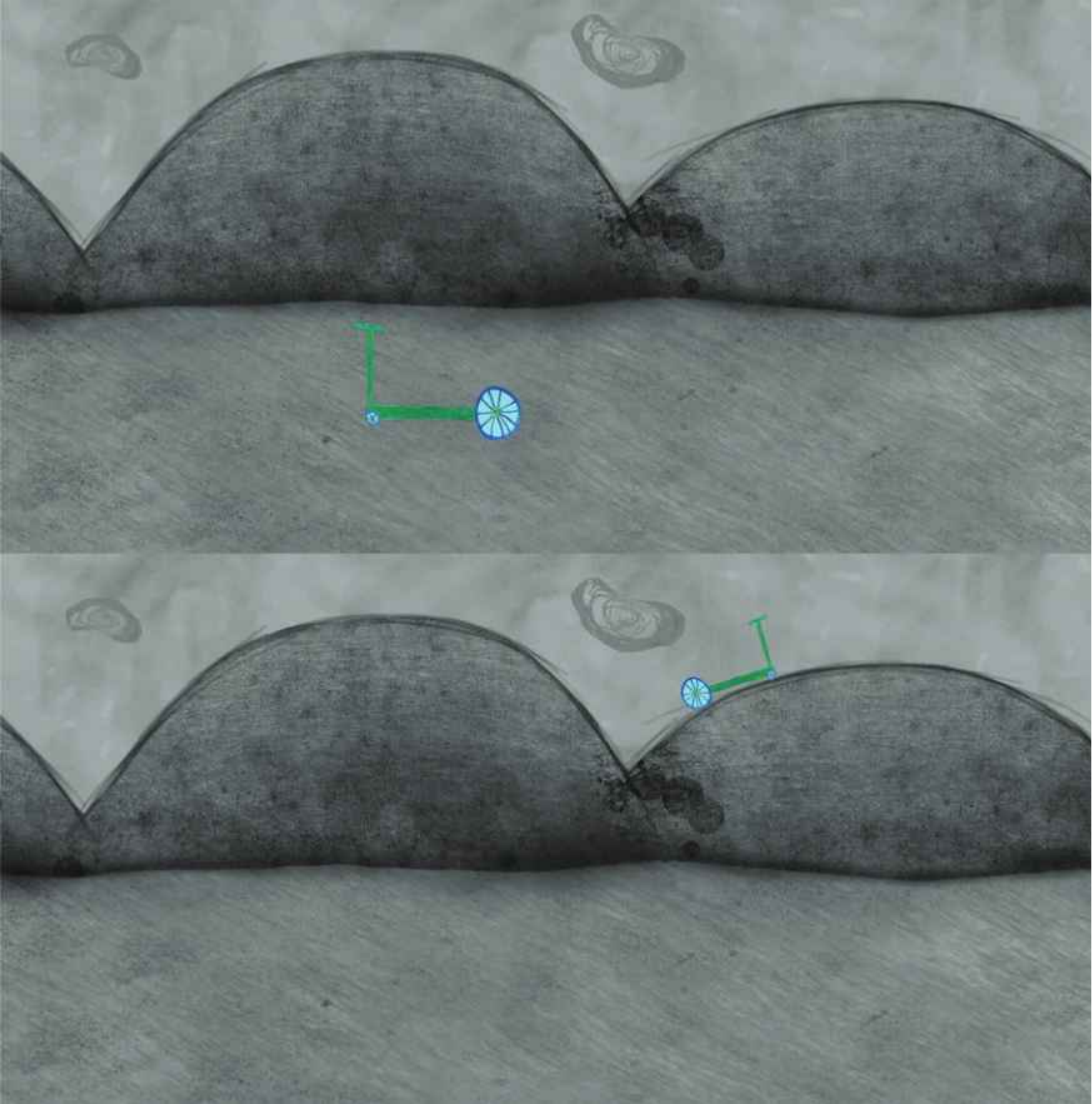

धीरे-धीरे साल खत्म हुआ और मैं
चौथी में चला गया।

मैंने पापा से कहा, “मुझे साइकिल दिलाओ।”
पापा ने कहा, “तू पहले किसी भी दोस्त की साइकिल चला और सीख ले।”

मैंने कहा, “पापा आपने तो मुझसे कहा था
कि तू जब चौथी क्लास में चला जाएगा तो
मैं साइकिल दिला दूँगा।”

"नहीं, अभी तू एक साल और
रुक जा। तू छोटा है।"

मैंने कहा, "मैं पाँचवीं में जाऊँगा
तो आपको ज़रूर लानी पड़ेगी।"

पापा ने कहा, "ठीक है, पक्का
साइकिल दिलाऊँगा।"

मैं पाँचवीं में चला गया।
मेरे पाँचवीं में जाने के बाद भी दो-तीन महीने बीत गए।

मैंने बहुत ज़िद पकड़ ली और पापा को साइकिल लानी पड़ी।

अब साइकिल तो आ गई...

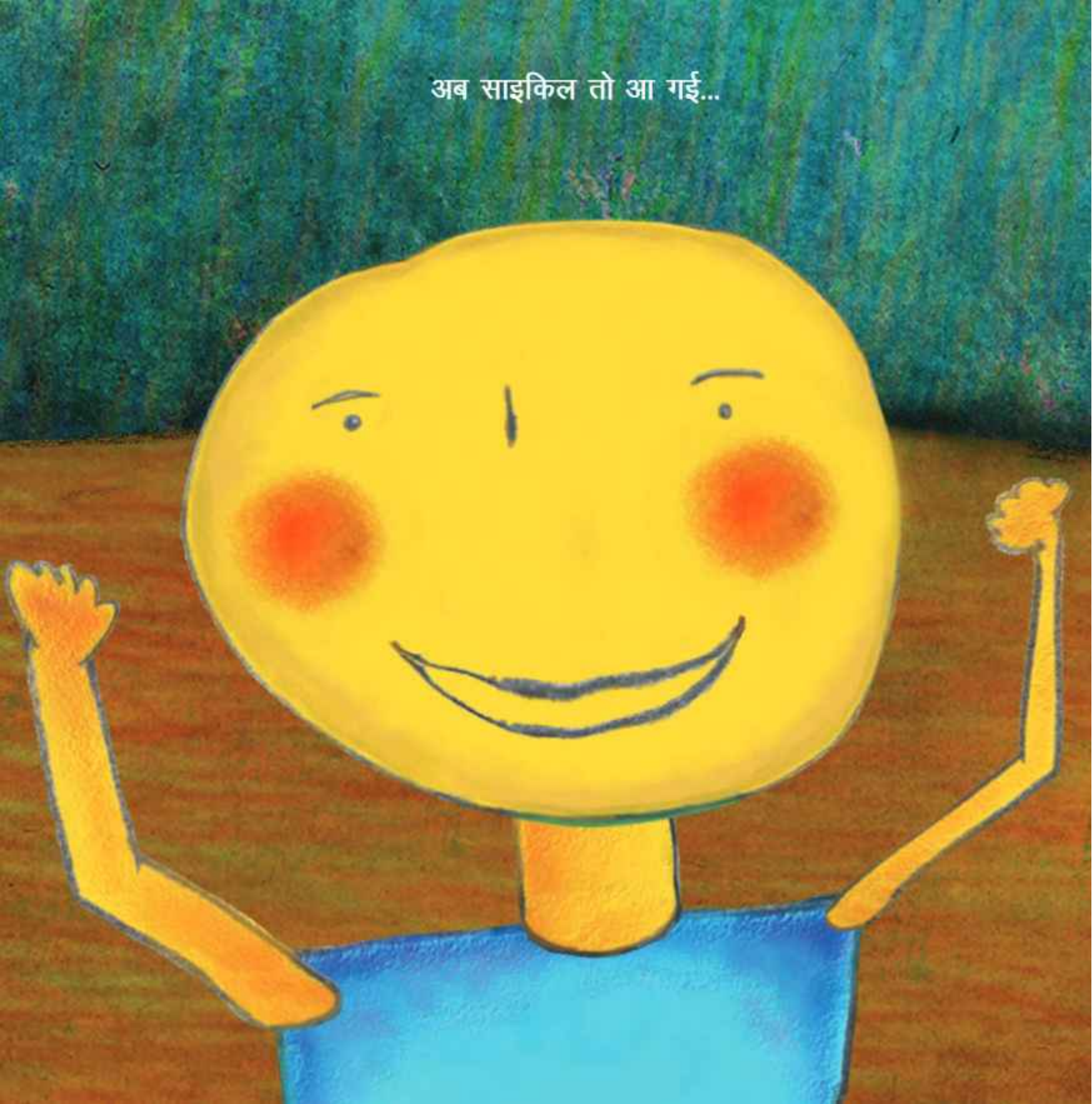

मगर सिखाने वाला कोई नहीं था।

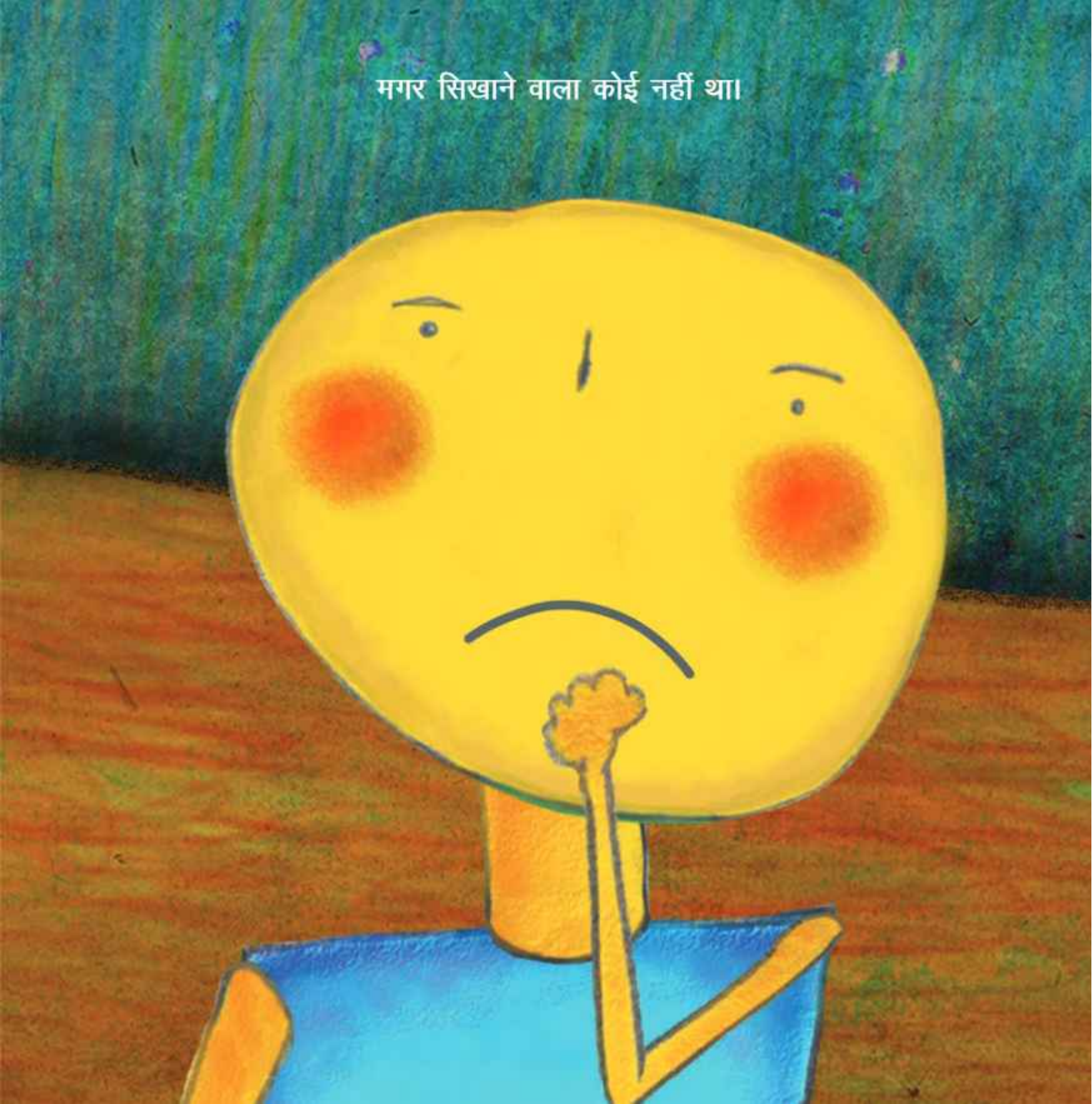

मैं बहुत दिन तक अपने मन से धीरे-धीरे चलाता और थोड़ी दूर जाकर रुक जाता।

मुझे डर था कि कहीं गिर न जाऊँ।

मैंने मम्मी को बताया।

मम्मी ने कहा, "पुलिस ग्राउंड में जाकर चला, वहाँ गिरेगा तो लगेगी भी नहीं।"

मैंने कहा, "ठीक है।"

मैं पुलिस ग्राउंड में साइकिल लेकर गया।
वहाँ मैंने साइकिल तो चलाई मगर ब्रेक नहीं लगा।

मैं गड्ढे में गिर गया। मेरे पाँव में लग गई।

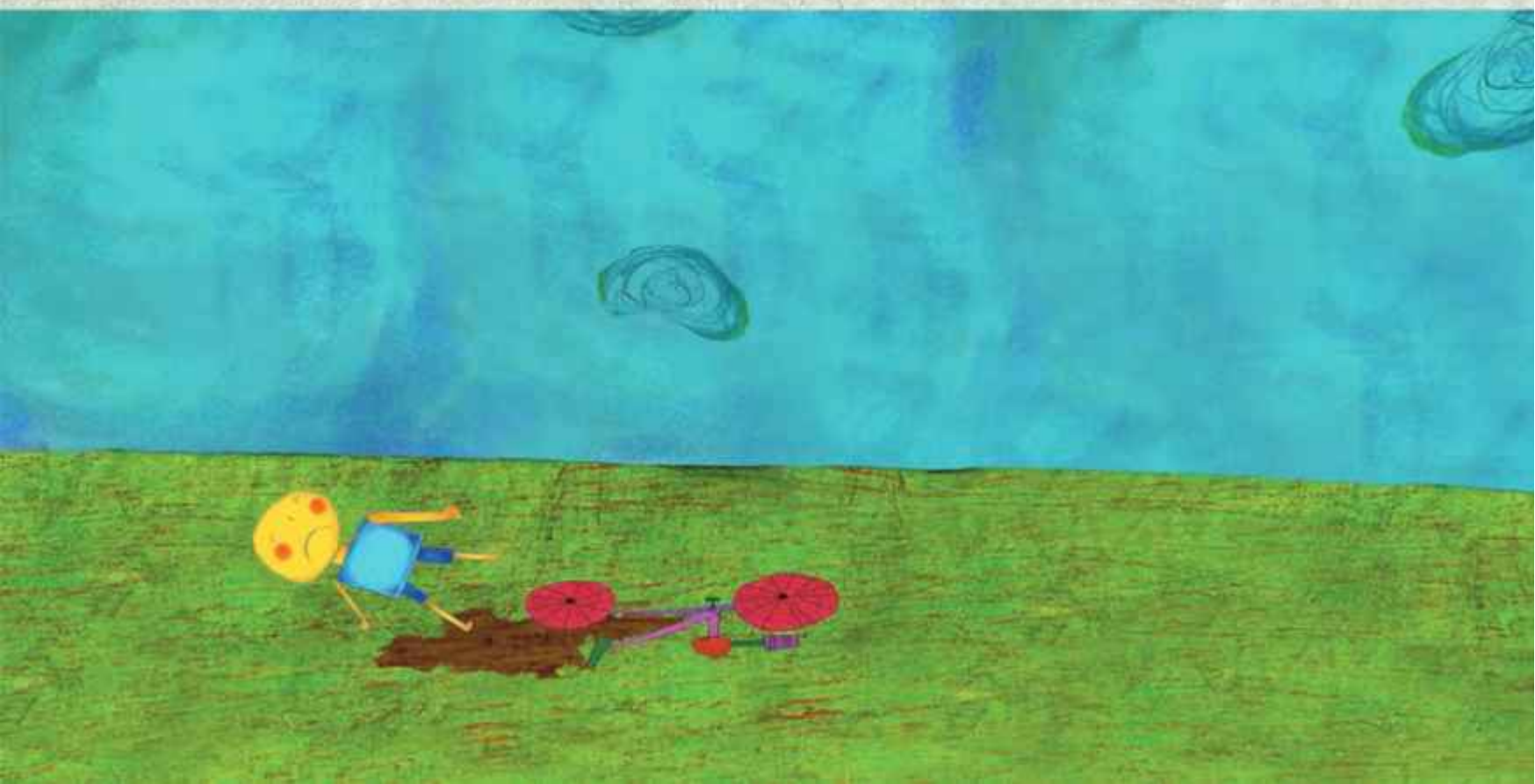

फिर धीरे-धीरे मेरे को साइकिल चलाना आ गई।

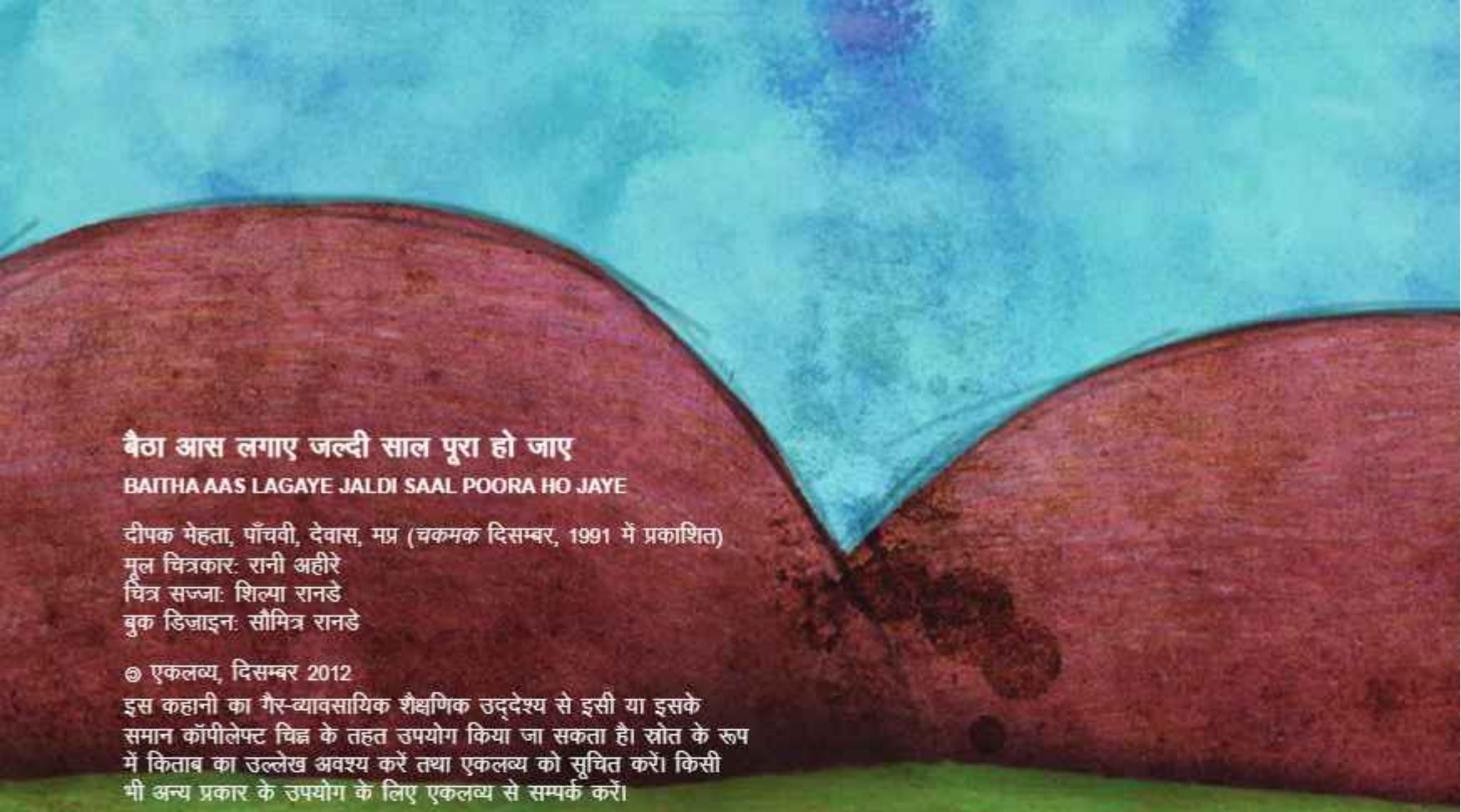

बैठा आस लगाए जल्दी साल पूरा हो जाए

BAITHA AAS LAGAYE JALDI SAAL POORA HO JAYE

दीपक मेहता, पाँचवी, देवास, मप्र (*चकमक* दिसम्बर, 1991 में प्रकाशित)
मूल चित्रकार: रानी अहीरे
चित्र सज्जा: शिल्पा रानडे
बुक डिज़ाइन: सौमित्र रानडे

© एकलव्य, दिसम्बर 2012
इस कहानी का गैर-व्यावसायिक शैक्षणिक उद्देश्य से इसी या इसके समान कॉपीलेफ्ट चिह्न के तहत उपयोग किया जा सकता है। स्रोत के रूप में किताब का उल्लेख अवश्य करें तथा एकलव्य को सूचित करें। किसी भी अन्य प्रकार के उपयोग के लिए एकलव्य से सम्पर्क करें।

पहला संस्करण: दिसम्बर 2012 (5000 प्रतियाँ)
पहला पुनर्मुद्रण: सितम्बर 2017 (3000 प्रतियाँ)
दूसरा पुनर्मुद्रण: फरवरी 2018 (5000 प्रतियाँ)
तीसरा पुनर्मुद्रण: जनवरी 2021 (3000 प्रतियाँ)
चौथा पुनर्मुद्रण: जुलाई 2022 (3000 प्रतियाँ)
कागज़: 100 gsm मेपलिथो और 300 gsm पेपर बोर्ड (कवर)

आईआईटी, मुम्बई के इंडस्ट्रियल डिज़ाइन सेंटर के डमरू प्रोजेक्ट में पराग इनिशिएटिव, सर रतन टाटा ट्रस्ट एवं नवजबाई रतन टाटा ट्रस्ट, मुम्बई के वित्तीय सहयोग से विकसित

ISBN: 978-93-81300-54-1
मूल्य: ₹ 70.00

प्रकाशक: **एकलव्य फाउंडेशन**
जमनालाल बजाज परिसर
जाटखेड़ी, भोपाल - 462 026 (मप्र)
फोन: +91 755 297 7770-71-72
www.eklavya.in / books@eklavya.in

मुद्रक: आर के सिक्युप्रिंट, भोपाल; फोन: +91 755 256 7589

IDC,IIT BOMBAY

एकलव्य

मूल्य: ₹ 70.00

9 789381 300541

SRTI & NRTI के वित्तीय सहयोग से विकसित